E- ISSN No: 2395-0269
International Journal of Applied and Universal Research
Volume 2, Issue VI, DECEMBER 2015 Available online at: www.ijaur.com

"जय शंकर प्रसाद प्रेम और सौन्दर्य के कवि "

श्रीमती काजल गुप्ता'
उदय कुमार गुप्ता''
शोधार्थी, महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म.प्र.)
''शोधार्थी, महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म.प्र.)

छायावाद प्रेम और सौन्दर्य को पर्याप्त महत्व देता रहा है और प्रसाद भी छायावादी कवि होने के कारण सौन्दर्य की और आकर्षित रहे हैं। यही कारण है कि प्रसाद ने अपने काव्य में सौन्दर्य को सर्वाधिक महत्व दिया है। वह सौन्दर्य चाहे प्रकृति का रहा हो, चाहे मानवीय। उन्होंने सौन्दर्य के विलक्षण चित्र खीचें हैं जिन्हें देखकर ऐसा लगता है कि कवि का मन सौन्दर्य चित्रण में काफी रंगा हुआ है। 'कामायनी' और 'आँसू' में यह स्थिति विशेष रूप में देखी जा सकती है जिसमें प्रेम और सौन्दर्य की मादकता छिटक रही है। जहाँ तक उनके काव्य ग्रंथ 'आंसू' का प्रश्न है, वह तो पूर्णतः विरह काव्य ही है। जिसमें यह स्पष्ट है कि कवि ने किसी अनुपम रूपवती रमणी को प्यार किया था। 'आंसू' में 'प्रेम' और 'सौन्दर्य' के बड़े प्रभावी चित्र अंकित हैं। 'आंसू' एक चित्रोपम काव्य है जिसमें रूप सौन्दर्य के मार्मिक चित्र हैं –

''प्रतिमा में सजीवता सी बस गई सुहानि आँखों में।
थी एक लकीर हृदय में जो अलग रही आँखों में।।''

कहीं पर मादक हँसी का चित्र है जिसमें प्रभातकालीन ऊषा जैसी अरूणिमा है, स्फूर्ति है, नवजागरण है माधुर्य और मस्ती भरी हुई है –

''विकसित सरजिस वन वैभव मधु ऊषा के अंचल में।
उपहास करा वे अपना जो हंसी देख ले पल में।।''

छायावादी प्रेम भले ही अतीन्द्रिय हो पर प्रसाद का प्रेम वायवी नहीं है उसमें मादकता है आकर्षण है, उन्माद और समर्पण है। कामायनी की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं जिनमें श्रद्धा मनु के परस्पर समर्पण को चित्रित किया गया है–

''समर्पण लो सेवा का साद,
सजल संसृति का यह पतवार।
आज से यह जीवन उत्सर्ग,
इसी पद तल में विगत–विकार।।
दया, माया, ममता लो आज,
मधुरिमा लो अगाध विश्वास।
हमारा हृदय रत्न निधि स्वच्छ,
तुम्हारे लिए खुला है पास।।''

प्रसाद का प्रेम यथार्थ के धरातल पर टिका हुआ है। प्रेमी का प्रिय के आगमन के पूर्व हृदयाकाश सूना ही था परन्तु प्रिय ने ही उसमें आकर सरसता, मादकता भर दी –

'' माना कि रूप सीमाहै सुन्दर तब चिर यौवन में।
पर समा गये थे मेरे मन के निस्सीम गगन में।।''

संयोग पक्ष के मधुर प्रभावी चित्रों की बड़ी सजीव योजना प्रसाद काव्य में हुई है। जहाँ तक वियोग का प्रश्न है वह तो अपने निखार पर प्रसाद काव्य में सिमट आया है। कवि का प्रिय से मिलन हुआ था, पर वह मिलन अस्थायी थौ अतीत की सुखद स्मृतियाँ वर्तमान को नितान्त दुर्बल बना रही हैं –

अभिलाषाओं की करवट फिर सुप्त व्यथा का जगना।
सुख का सपना हो जाना, भीगी पलकों का लगना।।''

प्रसाद के प्रेम निरूपण में कहीं भी वासना के पंक का स्पर्श तक नहीं मिलता। उनको प्रेम में प्रतिदान तक की भी आकांक्षा नहीं है। अपितु इसमें सेवा, समर्पण, त्याग, बलिदान की भावना प्रधान है –

''दया माया ममता लो आज मधुरिमा लो अगाध विश्वास।
हमारा हृदय रत्न निधि स्वच्छ, तुम्हारे लिए खुला है पास।।''

प्रसाद जी को अपने देश के गौरवशाली अतीत एवं समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा के प्रति बड़ा लगाव रहा है उनके देश प्रेम की भावना उन्हें बड़ा से बड़ा बलिदान करने की ओर प्रेरित करती है –

''वही है रक्त वही है देश वही साहस है वैसा ज्ञान।
वही है शांति वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य संतान।''
जिए तो सदा उसी के लिए यही अभिमान रहे यह हर्ष।
निछावर कर दे हम सर्वस्व हमारा प्यारा भारत वर्ष।''

प्रकृति 'प्रसाद' जी से अलग नहीं है अपितु वह उन्हीं के हृदयगत भावों का प्रतिबिम्ब है। इसमें उनका तादात्म्य हो गया है। उनकी प्रकृति प्रायः नारी रूप में चित्रित हुई है।

''वे कुछ दिन कितने सुन्दर थे। 'जब सावन घन सघन बरसते, इन आँखों की छाया भर थे। चित्र खींचती है जन चपला, नील मेघ पट पर वह विरला, मेरी जीवन स्मृति के जिसमें खिल जाते वे रूप मधुर थे।''

प्रसाद का काव्य रहस्यात्मकता लिए हुए भी है, उनका वेदना भाव कहीं तो निजी जीवन के विषाद से उत्पन्न है तो कहीं वह समष्टि के दुःख से उत्पन्न सात्विक व्यथा का रूप ले लेता है –

भूलता ही जाता दिन रात सजल अभिलाषा कलित अतीत। बढ़ रहा तीमिर गर्भ में नित्य, दीन जीवन का यह संगीत।''

प्रसाद जी के हृदय में प्रेम और सौन्दर्य का मणिकांचन संयोग है। मधुमय कोमल कल्पनाओं का आश्रय लेकर वे सूक्ष्म सौन्दर्य का जैसा जीवंत रूप प्रस्तुत करते हैं वह अन्यत्र देखने को नहीं मिलता –

''रो रो कर सिसक सिसक कर, कहता मैं करूण कहानी। तुम सुमन नोचते जाते, करते जानी अनजानी।''

जयशंकर प्रसाद वास्तव में प्रेम और सौन्दर्य के कवि है। उन्होंने छायावाद में उस प्रवृत्ति का विश्लेषण किया जो उनकी यश की सहचरी बनी, वे छायावाद के एकमात्र प्रवर्तक कवि माने जाते तैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

(1) कामायनी – जयशंकर प्रसाद।
(2) आंसू–जयशंकर प्रसाद।
(3) हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र।
(4) छायावाद – नामवर सिंह।